एंटीबायोटिक युग का अवसान

विश्व स्वास्थ्य संगठन ने चेतावनी दी है कि एंटीबायोटिक युग समाप्त होने को है और हम एंटीबायोटिक-पश्चात युग की दहलीज़ पर खड़े हैं। संगठन ने इसे एक वैश्विक संकट निरूपित करते हुए एक विश्व व्यापी निगरानी नेटवर्क स्थापित करने की ज़रूरत जताई है।

129 सदस्य देशों से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर तैयार की गई एक रिपोर्ट में संगठन ने बताया है कि दुनिया के हर इलाके में एंटीबायोटिक दवाइयों के खिलाफ व्यापक प्रतिरोध पैदा हो चुका है। इसके लिए मुख्य रूप से एंटीबायोटिक औषधियों का अंधाधुंध इस्तेमाल ज़िम्मेदार है।

सूक्ष्मजीवों में एंटीबायोटिक औषधियों के खिलाफ प्रतिरोध पैदा होने का मतलब यह है कि साधारण से संक्रमण और छोटी-मोटी चोटें भी जानलेवा साबित हो सकती हैं। एंटीबायोटिक औषधियां इन संक्रमणों को आसानी से संभालती रही हैं। रिपोर्ट के मुताबिक खास चिंता का विषय यह है कि कार्बापेनीम नामक एंटीबायोटिक के खिलाफ भी प्रतिरोध पैदा हो गया है। रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया के कुछ इलाकों में कई रोगों के जनक ग्राम-ऋणात्मक बैक्टीरिया के आधे संक्रमण कार्बापेनीम के प्रतिरोधी हो चुके हैं।

दिक्कत यह है कि कार्बापेनीम फिलहाल हमारे पास आखरी हथियार है और इसका कोई विकल्प नहीं है। विकल्प की खोज के लिए जिस तरह के संसाधनों की ज़रूरत है, उनका अभाव है। जैसे कंपनियों को नए एंटीबायोटिक्स की खोज के अनुसंधान पर धन लगाने का कोई उत्साह या प्रलोभन नहीं है। वैसे भी शोधकर्ताओं के लिए ग्राम-ऋणात्मक बैक्टीरिया के खिलाफ औषधि विकसित करना मुश्किल रहा है।

संगठन के मुताबिक सबसे ज़्यादा चिंता का विषय यह है कि अधिकांश देशों के पास एंटीबायोटिक प्रतिरोध सम्बंधी व्यवस्थित जानकारी भी नहीं है और न ही ऐसी जानकारी जुटाने की व्यवस्था है। वैसे एंटीबायोटिक प्रतिरोध पिछले एक दशक से एक समस्या रहा है मगर कोई विश्व व्यापी निगरानी तंत्र विकसित नहीं हो पाया है। मात्र 22 देशों के पास 9 ऐसी एंटीबायोटिक-बैक्टीरिया जोड़ियों के बारे में जानकारी थी जो आज सबसे अधिक चिंता के सबब हैं। और निकट भविष्य में भी ऐसे किसी निगरानी तंत्र की स्थापना के आसार नहीं हैं क्योंकि इसके लिए ज़रूरी धन नहीं है और न ही किसी ने इसका वायदा किया है। ***(स्रोत फीचर्स)***